॥१० भारामंह्त्वा निर्वानरामुर्वीकृत्वा पितः भीतिकरिष्येइत्यर्थः॥यन्वेवमादिवचसारामस्तृतिपरतयाक्केशेनव्याख्यानतहृथेव॥कवेःकविनिवद्धवकुश्वतथातात्वर्याभाविति । त्रिक्षात्वाक्ष्वावित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वित्यात्वत्यात्वित्यात्वत्यात्वत्यात्वत्यात्वत्यात्वत्यात्वत्यात्वत्यात्वत्यात्वत्यात्वत्यात्वत्यात्वत्यात्वत्यात्वत्यात्वत्यात्वत्यत्यात्वत 🖁 शरैस्तमिद्रज्ञितं नैवपस्पर्शतुः परप्टशतुः अंतर्हितत्वादितिभावः॥ २४॥ धूमांधकारंचके माययेतिशेषः॥ दिशश्वांतर्दधे अंतर्धापयामास नीहारवशात्तदविवेकं माययासंपा दयामासेत्यर्थः॥२५॥२६॥२ णादत्तवरैर्वरदत्तैः॥२८॥२९॥